मधुबन ओम् शान्ति अंक 302 सितम्बर 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(10-08-17)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म स्नेह में समाये हुए एकता, प्रेम और सच्चाई के सूत्र में पिरोये हुए, दिलवाला बाप की दिल में रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - यह अगस्त मास हमारी मीठी दादी का मास है, सभी ने दादी प्रकाशमणि की बहुत अच्छी पालना ली है। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी दादी ने मिलकर पूरे ब्राह्मण परिवार को प्रेम और एकता के सूत्र में बांध विश्व के कोने-कोने में बेहद की सेवायें कराई हैं। अभी भी हमारा यह पूरा ही दैवी परिवार एकमत हो विश्व के कोने-कोने में बाप को प्रत्यक्ष करने की बहुत अच्छी सेवायें कर रहा है।

अभी हम साइलेंस में बैठे हैं, कोई संकल्प नहीं है, हमारी दृष्टि में यह सब आत्मायें हैं, मेरे बाबा के बच्चे हैं। यह कितना अच्छा लगता है, बाबा हमारे समय को सफल करता हुआ देख एक्स्ट्रा प्यार करता है। समय, स्वयं और बाबा तीनों की याद से अन्दर की अवस्था नीचे ऊपर नहीं होती है। भाग्यवान हैं, जो एकाग्रता की शक्ति से स्थिति को अच्छा बना रहे हैं। यह समय और संकल्प श्रेष्ठ हो, क्वालिटी वाला हो, साधारण न हो तो समझेंगे औरों को प्रेरणा देने लायक हैं। साकार बाबा के जो लास्ट शब्द हैं निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी। तो अभी हम सबको ऐसी निराकारी स्थिति में रह निर्विकारी और निरंहकारी बनना है। देहभान से परे रहना है। यह कितना अच्छा सहज पुरुषार्थ है। ब्रह्मा बाबा ने साकार में रहते निराकार को ऐसा अपना बनाके रखा जो उनसे हम सबको सदा ही लाइट और माइट मिली है।

बाबा के सब बच्चे बहुत अच्छे हैं क्योंकि सिम्पल रहने का सैम्पल बने हैं। मुझे यह चाहिए, मुझे यह चाहिए अरे, क्या करेंगे? सच्चाई, सफाई, सादगी वन्डरफुल है। सफेद ही सफेद, कम खर्च बालानशीन, तब कहेंगे सिम्पल। यज्ञ में हमें भोजन भी सिम्पल मिलता है, जीभरस नहीं है। जीभरस नुकसानकारक है, साथ-साथ बाबा ने अन्तर्मुखी सदा सुखी रहना सिखाया है। बाह्यमुखता में टाइम वेस्ट होता है। अभी संगम का यह समय बड़ी कमाई करने का है। जो भी कारोबार है, उसमें वेस्ट मनी, वेस्ट टाइम नहीं करना है। एक के नाम से एकानामी से इतना बड़ा यज्ञ चल रहा है। हमें सिम्पल रहना, सदा सन्तुष्ट रहना है। सभी गुणों में सन्तुष्ट रहने का जो गुण है वह बहुत वैल्युबूल है। सदा सन्तुष्ट, नो प्रॉब्लम।

हम सबने तो अपनी दिल दिलाराम को दे दी है। दिल सदा सच्ची है इसलिए साहेब राज़ी है। हमें कभी नाराज़ नहीं होना है। जो ईश्वर के बच्चे हैं, उनमें ऐसी शक्ति है जो सदा ही सबके साथ रहते अन्दर की भावना को समझ जाते हैं इसलिये राज़ी खुशी में रहते हैं। आज जितनी भी सेवायें हुई हैं, वो इसी भावना से हुई हैं। जहाँ कदम वहाँ कमाई है, यह मेरा अनुभव बहुत अच्छा है। कोई भी देश में गई होंगी, कोई न कोई प्रभु का प्यारा ऐसा आगे आता है जो अनेक आत्माओं की सेवा के निमित्त बन जाता है।

अभी भी अचानक कुछ समय के लिए मैं लण्डन आई हूँ। पूरा लण्डन परिवार भी आप सबको बहुत-बहुत याद दे रहा है। मेरी तबियत ठीक है, आप सबका स्वास्थ्य भी अच्छा होगा।

सभी को हमारी बहुत-बहुत स्नेह भरी याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"परमात्म प्यार के अनुभवी बनो"

1) सहजयोगी बनने के लिए परमात्म-प्यार के अनुभवी बनो। परमात्म-प्यार उड़ती कला में ले जाने का साधन है। उड़ने वाले कभी धरनी की आकर्षण में आ नहीं सकते। माया का कितना भी आकर्षित रूप हो लेकिन वह आकर्षण उड़ती कला वालों के पास पहुँच नहीं सकती।

2) आप बच्चों के लिए परमात्म प्यार ही आनंदमय झूला है, इसी सुखदाई झूले में सदा झूलते रहो। परमात्म प्यार अनेक जन्मों के दु:खों को एक सेकण्ड में समाप्त कर देता है। परमात्म प्यार सर्व शक्ति सम्पन्न है, जो निर्बल आत्माओं को शक्तिशाली बना देता है। ऐसे श्रेष्ठ परमात्म प्यार के अनुभवी बनो और बनाओ तो दु:खों से छूट जायेंगे।

3) जैसे कमल पुष्प कीचड़ से बाहर नहीं निकलता, कीचड़ और पानी में ही होता है लेकिन न्यारा होता है। ऐसे न्यारे बनो तो जितने न्यारे उतना बाप के प्यारे बनेंगे, स्वत: ही बाप का प्यार अनुभव होगा और यह परमात्म-प्यार ही छत्रछाया बन जायेगा। जिसके ऊपर परमात्म-छत्रछाया है उसको कोई कुछ नहीं कर सकता इसलिए फ़खुर में रहो कि हम परमात्म-छत्रछाया में रहने वाले हैं।

4) सेवा में वा स्वंय की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

5) परमात्म प्यार इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म का आधार है। कहते भी हैं प्यार है तो जहान है, जान है। प्यार नहीं तो बेजान, बेजहान हैं। प्यार मिला अर्थात् जहान मिला। दुनिया एक बूँद की प्यासी है और आप बच्चों का यह प्रभु प्यार प्रापर्टी है। इसी प्रभु प्यार से पलते हो अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हो। तो सदा प्यार के सागर में लवलीन रहो।

6) परमात्म-प्यार अखुट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है–न्यारा बनना। जो जितना न्यारा है उतना वह परमात्म प्यार का अधिकारी है। परमात्म प्यार में समाई हुई आत्मायें कभी भी हद के प्रभाव में नहीं आ सकती, सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहती हैं। उनसे सदा रूहानियत की खुशबू आती है।

7) प्यार की निशानी है–जिससे प्यार होता है उस पर सब न्यौछावर कर देते हैं। बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो रोज़ प्यार का रेसपान्ड देने के लिए इतना बड़ा पत्र लिखते हैं। यादप्यार देते हैं और साथी बन सदा साथ निभाते हैं। तो इस प्यार में अपनी सब कमजोरियां कुर्बान कर दो।

8) बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो–मेरे हो। ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो दिल से कहो बाबा जो हो वह सब आप ही हो। कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ।

9) जो प्यारा होता है उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वत: आती है। सिर्फ प्यार दिल का हो, सच्चा और नि:स्वार्थ हो। जब कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा–तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते और नि:स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता इसलिए कभी मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो।

10) यह परमात्म प्यार की डोर दूर-दूर से खींच कर ले आती है। यह ऐसा सुखदाई प्यार है जो इस प्यार में एक सेकण्ड भी खो जाते हैं उनके अनेक दु:ख भूल जाते हैं और सदा के लिए सुख के झूले में झूलने लगते हैं।

11) जीवन में जो चाहिए अगर वह कोई दे देता है तो यही प्यार की निशानी होती है। तो बाप का आप बच्चों से इतना प्यार है जो जीवन के सुख-शान्ति की सब कामनायें पूर्ण कर देते हैं। बाप सुख ही नहीं देते लेकिन सुख के भण्डार का मालिक बना देते हैं। साथ-साथ श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी देते हैं, जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो – यही परमात्म प्यार है।

12) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती ।

13) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो अमृतवेले से ही बच्चों की पालना करते हैं। दिन का आरम्भ ही कितना श्रेष्ठ होता है! स्वयं भगवन मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुहरिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! बाप की मोहब्बत के गीत आपको

उठाते हैं। कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं – मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो इस प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप है 'सहज योगी जीवन'।

14) जिससे प्यार होता है, उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है। तो बाप को बच्चों का अपसेट होना अच्छा नहीं लगता इसलिए कभी भी यह नहीं कहो कि क्या करें, बात ही ऐसी थी इसलिए अपसेट हो गये... अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ।

15) बापदादा का बच्चों से इतना प्यार है जो समझते हैं हर एक बच्चा मेरे से भी आगे हो। दुनिया में भी जिससे ज्यादा प्यार होता है उसे अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। यही प्यार की निशानी है। तो बापदादा भी कहते हैं मेरे बच्चों में अब कोई भी कमी नहीं रहे, सब सम्पूर्ण, सम्पन्न और समान बन जायें।

16) आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो। अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल होगा तो कभी और किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।

17) ये परमात्म प्यार इस एक जन्म में ही प्राप्त होता है। 83 जन्म देव आत्मायें वा साधारण आत्माओं द्वारा प्यार मिला, अभी ही परमात्म प्यार मिलता है। वह आत्म प्यार राज्य-भाग्य गँवाता है और परमात्म प्यार राज्य-भाग्य दिलाता है। तो इस प्यार के अनुभूतियों में समाये रहो।

18) बाप से सच्चा प्यार है तो प्यार की निशानी है–समान, कर्मातीत बनो। 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ। कर्मेन्द्रियां आपसे नहीं करावें लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ। कभी भी मन-बुद्धि वा संस्कारों के वश होकर कोई भी कर्म नहीं करो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 01-02-14 *मधुबन*

"सच्चाई को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है, सच तो झूठ को भी खत्म करने वाला है"

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति। हम शब्दों में कैसे आऊं, वाह बाबा वाह! कहने से क्या क्यों से बच गये। जो हो रहा है, अच्छा हो रहा है। अमृतवेले के महत्व को जान जो बाबा के पास हाज़िर होते हैं उन्हें सुख मिलता इलाही है। अमृतवेले का सुख, फिर मुरली का वन्डरफुल महत्व है। यह जो बाबा के बोल हैं बच्चे यह ज्ञान गुह्य है, गोपनीय है, रहस्ययुक्त है। अमृत पी रहे हैं, पिला रहे हैं और कोई काम नहीं है।

मैंने देखा है 5 विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तो चले गये पर उनके बाल बच्चों में ईर्ष्या बहुत-बहुत अन्दर में परेशान करती है। दूसरों को आगे बढ़ता हुआ देख सहन नहीं होता। उनका ज्ञान योग सब छूट जाता है। बाबा कहते बच्चे मायाजीत बनना हो तो विकर्माजीत बनो। जो बाबा ने कहा सतयुग में कर्म अकर्म हैं, कलियुग में कर्म विकर्म हैं और अभी श्रेष्ठ कर्म करने का समय है।

आत्मा के ज्ञान की गहराई में जाओ तब ही आत्म-अभिमानी बन सकेंगे। मैं आत्मा हूँ, ऐसे सिर्फ नहीं मन बुद्धि संस्कार हैं, यह शरीर की कर्मेन्द्रियाँ हैं। मैं आत्मा शरीर में हूँ, पर मुझ आत्मा को इस शरीर की विकारी कर्मेन्द्रियों के वश नहीं रहना है। मन, बुद्धि, संस्कार और पाँच विकारों को जान परमात्म शक्ति ले 5 विकारों पर जीत पानी है, दिन रात यही धुन लगी हुई है मुझे मायाजीत बनना है, यह कर्मेन्द्रियां शान्त और श्रेष्ठ कर्म करने के लिए हैं इसके लिए मन शान्त, बुद्धि शुद्ध हो। कर्मेन्द्रियों के कारण मन चंचल है। बुद्धि में ज्ञान को धारण करो, परमात्मा से योग लगाओ। तो आत्मा में शक्ति आती है। फिर सेवा की बात आती है, दिनरात यही भावना है, यही स्वप्न है कि सबकी अन्त मते सो गते अच्छी हो। सबकी सद्गति हो, वह सेवा कैसे होगी? मन्सा शुभ भावना से। निस्वार्थ भाव है, निष्काम सेवा है। बाबा के अन्तिम महावाक्य हैं बच्चे निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी हो रहना। सेवा करते भी ऐसी स्थिति हो। ऐसे नहीं कि सेवा में ऐसा बिजी हो जायें जो यह स्थिति बनाने का समय ही न मिले। अभी आप सभी के चिंतन में एक ही बाबा हो और कोई चिंतन नहीं। मैं राइट हूँ, यह सिद्ध करना जरुरी नहीं है। सच, सच है। सच इतना सच है जो झूठ को खत्म करने वाला है। इतना सच्चा बाबा ने बनाया है जो मुझे पता ही नहीं है कि झूठ क्या होता है। जिनका सच्चा बनने का पुरुषार्थ कम है, उन पर बहुत तरस पड़ता है।

इस बारी बाबा ने 4-5 बारी कहा अचानक कुछ भी हो जाये, उसके पहले ऐसी सेवा कर लो। जो सेवा बाबा को करानी है, वह मुझे करनी है। मन्सा सेवा का अभ्यास बढ़ाना है। वाचा से ज्ञान थोड़ा दो, कर्मणा से, सम्बन्ध से गुणदान दो। सम्बन्धों में गुणों का पता चलता है। हम राजयोगी, राजऋषि हैं, कर्मयोगी हैं, सतयुग की स्थापना करने के निमित्त हैं।

भक्त लोग लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जायेंगे, हम भी जाते थे, दर्शन करते थे, पर यह कभी सोचा थोड़ेही था कि इन्होंने यह पद कैसे पाया? बाबा ने यह बताया, नर ऐसी करनी करे जो नर नारायण बन जाये, नारी लक्षण ऐसे धारण करे जो श्री लक्ष्मी बन जाये। तो हर एक को लक्ष्मी-नारायण बनना है। लक्षण को कर्म में देखना है, कर्म में श्रेष्ठ कर्म की करनी दिखानी है। तो विकर्माजीत बनने के लिए अटेन्शन बहुत चाहिए। खुद के लिए शुभ चिंतन में रहना, औरों के लिए शुभ चिंतक बनना। यह क्यों बोलते हैं, क्या बोलते हैं... क्यों क्या से बाबा ने छुड़ा दिया है। सिद्ध करने से कोई पता नहीं चलेगा, सच्चा है या झूठा है, सिद्ध करने की जरुरत नहीं है। सच्चाई में बल है। भगवान का बच्चा बनना माना खुद सच्चा बनना, तो ताकत आती है।

यह गीत बहुत प्यारा लगता है - बचपन के दिन भुला न देना... याद हमारी रूला न देना, लम्बे हैं जीवन के रास्ते, आओ चलो हम गाते हंसते... कितना अच्छा है। देखो सारा लाइफ क्या किया? बचपन के दिन याद करो, बहुत अच्छी कहानियां हैं। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"सी फादर, फॉलो फादर करते, कर्तापन के भान से, मान अपमान की इच्छा से परे अकर्ता और अभोक्ता बनना है" (दादी जानकी)

वर्तमान समय दुनिया में चारों ओर मनुष्य चिंताओं में हैं, उन सबकी चिंतायें मिटानी हैं। उसके लिए शुभ चिंतन में रहना है और सारे विश्व के लिए शुभ चिंतक बनना है, यह बड़ा कोर्स है। बाप समान बनने के लिए शुभ चिंतन है। मेरा बाबा कैसा है, हमको देख दुनिया की आँख खुल जाये, यह कौन हैं? जैसे सूर्य की किरणें मिल रही हैं, ऐसे हमें भी मास्टर ज्ञान सूर्य और ज्ञान सागर बनना है। जैसे सागर को देखो तो आसमान और सागर इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं, वन्डरफुल!

बाबा हमेशा तीन बातें कहते थे, बच्चे मधुबन आते हैं एक तो रिफ्रेश होने के लिए, दूसरा बैटरी चार्ज करने के लिए, जिसकी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है, वो चलते चलते खड़े हो जाते हैं। उन्हें अगर किसी का सहयोग मिलता है तो शक्ति आ जाती है। तीसरा मधुबन में आते हैं बादल भरने के लिए, बादल बन करके जाए वर्षा करेंगे। साकार बाबा की कई बातें हर पल हर घड़ी स्मृति में आती हैं, और कुछ याद नहीं आता। बाबा के चरित्र और बोल, बाबा की दृष्टि, बाबा की भावना थी कि सबका भला हो। मुझे यह गीत बहुत अच्छा लगता था दु:खियों का दु:ख दूर करने वाले तेरा दु:ख दूर करेगा राम... यह प्रैक्टिकल देखा और हर पल यही अनुभव है।

हमारा सब न्यारा है, वन्डरफुल है। पहले देहभान से न्यारा होके देखो तो पता पड़ेगा हम सब एक दो से न्यारे हैं। हम कहें दोनों एक जैसे हों, नहीं हो सकता है, इम्पॉसिबुल है परन्तु भाग्यवान हैं, सौभाग्यवान हैं, पदमापदम भाग्यवान हैं, जो बाबा के महावाक्यों को कदम-कदम पर फॉलो करते हैं। बाबा कहते सी फादर फॉलो फादर। बाबा के यह महावाक्य वरदान के रूप में काम करते हैं तब तो आज सपूत बन सबूत दे रहे हैं।

तो सिर्फ इन आँखों से किसी को नहीं देखो तब यह आँखें बहुत अच्छा काम करेंगी तब ओनली सी फादर, फॉलो फादर कहेंगे। तो और कुछ नहीं करना है, कहना भी नहीं है, सोचना भी नहीं है। कर्तापन के भान से परे रहना है। मैंने कुछ नहीं किया है सिर्फ फॉलो किया है। मान अपमान की इच्छा से परे अभोक्ता, ऐसी स्थिति बनानी है। बाबा की मदद भी तभी खींच सकते हैं जब समय की वैल्यु है। संकल्प, समय, स्वयं, सहयोग, सच्चाई उसमें भी खास सच्चाई से संकल्प में कोई ऐसी बात आई नहीं है जो मुझे सोचना वा कहना पड़े कि इनका संस्कार ऐसा है। यही बात बोलेगा, यही करेगा... गई इज्जत। मैं अकर्ता हूँ, जो बाबा को कराना है, ड्रामा एक्यूरेट है, यज्ञ रचता बाबा है, बाबा का यज्ञ है। बाबा की सेवा में मददगार

बनने वालों को रिटर्न बाबा दे रहा है, हमको सिर्फ शुभ चिंतक रहना है। हम यह नहीं कह सकते हैं कि यह देखो क्या करता है, ऐसे अंगुली नहीं उठानी है, यह हमारी ड्युटी नहीं है। हमारी ड्युटी है, अगर देवता बनना है तो पहले सूक्ष्मवतन वाले फरिश्ते बनकर रहना है। देवता तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनेंगे। बनाने वाला बाबा बैठा है, बनाना उसका काम है, बनना मेरा काम है। जो ड्रामा में होगा, तो भावी पहले या भगवान पहले या भाग्य पहले? मैंने कहा जो भाग्य में होगा... यह नहीं कहना है, भाग्य बनाना है कल्प-कल्प के लिए।

जो राइट है वही करना है, वह छोड़ना नहीं है, यही कोई भी सिच्यूवेशन का सोल्यूशेन है। कोई कारण नहीं बताना है, कारण कोई है नहीं ना। तो चेक करके चेंज कर लो। जो करना है अब कर लो, कल किसने देखा... यह मंत्र है। जो बाबा कहे जैसे कहे, वैसे मुझे करना है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्चाई, प्रेम और विश्वास से करते चलो तो अन्त मते सो गते अच्छी होगी, यह गैरंटी है।

तीसरा क्लास

"सतोगुणी बनने का अभी भी समय है इसलिए रजो, तमोगुण को छोड़ सतोगुणी बनने का पुरुषार्थ करो" (दादी जानकी)

ओम् शान्ति। नुमः शाम के टाइम, संगठन में योग और ज्ञान की रूह-रिहान बहुत प्यारी है। जब प्यारी कहते हैं तो न्यारा बन जाते हैं। न्यारा और प्यारा - दो-दो शब्दों में सारे ज्ञान का सार आ जाता है। बाबा हम बच्चों को होली हंस बना रहा है। हंस दूसरे पंछियों से न्यारा रहता है। अपने को हंस रूप में देखो तो लगेगा कि मैं साधारण नहीं हूँ। हंस तैरना भी जानता है, उड़ना भी जानता है। जब आत्म-अभिमानी स्थिति है माना उड़ रहे हैं। मैं आत्मा हूँ। कारोबार में भारीपन ज्यादा हो जाता है। बाबा ने प्यार से समझाया कि हर आत्मा का पार्ट न्यारा है, बना बनाया ड्रामा है। लेकिन बदलने का समय अब है। हम बदलेंगे तो जग बदलेगा.. बहुत सहज बात है। बाबा कहता है मैं किसी को प्रेरणा नहीं देता हूँ, लेकिन हमारा जीवन प्रेरणा देने लायक हो। कोई गलती न हो। संगमयुग में छोटी गलती भी बहुत नुकसानदायक है।

एक अन्दर से देही-अभिमानी स्थिति, सम्पूर्ण निर्विकारी। आत्म-अभिमानी स्थिति है, शिव बाबा की याद है तो कार्य व्यवहार में सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना सहज है। काम नहीं, क्रोध नहीं, कोई लोभ, मोह नहीं इसलिए हमेशा बाबा कहता है कि मीठा बनो। मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। मेरा बाबा कितना मीठा है, ऐसा मीठा है - बाबा में अनेक गुण है ना। सर्व गुणों में सम्पन्न है इसलिए बहुत प्यारा लगता है। तो पुरुषार्थ में मुझे प्यारा बनना है, मीठा बनना है, सर्व गुण सम्पन्न बनना है। छुप-छुप के गुण देख लो, अवगुण नहीं देखना है - यह चोरी करना सीखो।

साकार में बाबा ने ऐसा ध्यान खिंचवाया है कि हर किसी की एक जैसी पालना हो। हर बात में एक्युरेट बनना है। एलर्ट रहना है, एक्युरेट रहना, आलराउण्डर हो - जो भी सेवा हो, यज्ञ की हर सेवा बहुत प्रेम, प्यार से करना है। रूद्र ज्ञान यज्ञ है, शिव भोलानाथ है। इस यज्ञ में रहकर समर्पित बुद्धि रहना है। सफल करना, सबकुछ स्वाहा करना है। यज्ञ में स्वाहा करते हैं। पांच शब्द याद रखना - पहला बाबा, दूसरा मैं आत्मा हूँ। यज्ञ की सेवा, ईश्वरीय परिवार और संगम का यह समय। समय व्यर्थ नहीं गंवाना है, समय अच्छा है जो करना है अब कर लें। अभी भी समय है सतोगुणी बनने का। रजो, तमोगुण छोड़ने का, सतो गुणी बनने का अभी समय है। नयन, कान, मुख सतोगुण से चमकता हुआ स्टार बन जाता है। सतो गुणी बाबा को साथ ले करके, बाबा के हर महावाक्य को बैठ करके मनन चिन्तन करता है।

एक ज्ञान सूर्य बाबा है, चन्द्रमा शीतलता देता है। मैं आत्मा चमकता हुआ सितारा हूँ, त्रिकालदर्शी हूँ। हम किसके बच्चे हैं, कार्य कौनसा है? शिवबाबा कौन है? वह निराकार परमपिता परमात्मा है - उनसे मिलना है, उनके पास जाना है, तो बताना है केरऑफ ब्रह्मा, माऊण्ट आबू। सबसे बड़ा तीर्थ स्थान यह है, यहाँ से वापिस जाने का मन नहीं होता है। दर्शनीय मूर्त बनना है। जो देखे शान्ति का, प्रेम का, सुख का अनुभव हो और आनन्द में मगन हो जाये। अच्छा। ओम् शान्ति।

"महाराथी वह है जो परिस्थितियों का सामना करने में महान हो, ऐसा महारथी ही लास्ट सो फास्ट जा सकता है" (गुल्जार दादी जी)

अभी पुरुषार्थ की रेस चल रही है, कोई भी सम्पन्न सम्पूर्ण नहीं बनें हैं। इसमें कोई महारथी हैं, कोई घोड़ेसवार, कोई प्यादे भी हैं। लेकिन बाबा कहते हैं लास्ट सो फास्ट भी जा सकते हैं। अभी तक एक भी सीट फाइनल रिजर्व नहीं है। पहला और दूसरा नम्बर मम्मा और बाबा की सीट तो फिक्स है, तीसरे नम्बर से सब खाली हैं। अभी रेस चल रही है। सीटी बजेगी तो सभी को सीट मिलेगी तब सीट पर सब बैठेंगे। अभी सीटी नहीं बजी है। अभी तो सब दौड़ रहे हैं यानि पुरूषार्थ कर रहे हैं। सिवाए दो सीट के फाइनल के अभी बाबा ने अनाउन्स कुछ नहीं किया है। यानि सभी को चान्स है। करो नहीं करो वह आपकी मर्जी, लेकिन मार्जिन सभी को है क्योंकि बाबा ने अनाउन्स नहीं किया है। भले हम लोग समझते हैं दादियाँ है ना वह तो आठ में आ ही जायेंगी। हम कहाँ जायेंगे! लेकिन बाबा ने अनाउन्स नहीं किया है। बाबा ने मम्मा बाबा के सिवाए कोई की सीट मुकरर नहीं किया है और जो भी चाहे वह चल सकता है क्योंकि बाबा ने यह राज़ सुनाया था कि लास्ट सो फास्ट का एक्जैम्पुल जरूर होना है। बाबा तो विदेशियों को भी कहता है। बाबा के अव्यक्त होने के बाद विदेश में सेवाकेन्द्र खुले हैं लेकिन उन्हों को भी कहता है कि कोई भी एक्जैम्पुल बन सकता है। बनना है तभी तो बाबा कहता है ना लास्ट सो फास्ट। होना ही नहीं तो बाबा क्यों कहता है। लेकिन कौन होना है, वह अभी तो दिखाई देगा भी नहीं ना, अभी तो गुप्त होगा। तो कोई भी हो सकता है पता नहीं आप भी हो लास्ट सो फास्ट में आपका ही नम्बर हो क्या पता? पता थोड़ेही पड़ता है, माया के तूफान कभी-कभी अच्छे-अच्छे को भी ऐसे ले जाते हैं, यह भी समाचार बहुत सुनते हैं। इतना अच्छा जिसमें शक्य भी नहीं होगा वह शादी करके पूछ लटका करके आ रहे हैं। क्या करें? तो यह भी होता है, माया है ना माया पता नहीं क्या-क्या करा लेती है तो किसी की भी सीट मुकरर नहीं है। आप सभी को चान्स है, कोई भी नम्बर ले सकता है। जब तक बाबा ने कहा है ना लेट का बोर्ड लगा है लेकिन टू-लेट का नहीं लगा है इसीलिए मार्जिन है, टू-लेट का बोर्ड लग जायेगा फिर नहीं होगा। फिर तो अनाउन्स हो जायेगा ना लेकिन अभी टू-लेट का बोर्ड नहीं लगा है इसीलिए सभी को मार्जिन है। कोई भी महारथी बन सकता है। महारथी माना जो परिस्थितियों को सामना करने में महान आत्मा है। महारथी माना यह नहीं कि जिसको हम महारथी कहते हैं वही महारथी फिक्स हो गये। नहीं। महारथी का अर्थ ही है जो समस्याओं में विजयी बन जाये। महान हो। तो अभी तो पुरूषार्थ में सभी नम्बरवार चल रहे हैं लेकिन फाइनल कोई नहीं हुआ है इसीलिए आप सभी को फ्रीडम है, कोई भी सीट लो और हमको तो खुशी है कि सीट लो। अच्छा है ना! अगर पीछे वाला आगे जावे तो कमाल गाई जायेगी ना।

तो यह तो बाबा का पक्का कर लिया होगा कि करना ही है। कोई भी स्थूल या सूक्ष्म काम हो लेकिन करना ही है।

दूसरा क्लास

टीचर्स के साथ (दादी गुल्जार)

टीचर्स को देखकर बाबा कितने खुश होते हैं। बाबा कहता है यह टीचर्स तो मेरे समान हैं क्योंकि मैं भी सेवा करता हूँ और टीचर्स भी सेवा करती हैं। तो मेरे समान कर्तव्य करने वाली निमित्त बहनें हैं। बाबा को तो टीचर्स का इतना रिगार्ड है, मैं तो कहती हूँ कि भगवान इतना रिगार्ड रखे, यह तो स्वप्न में भी नहीं था लेकिन अभी प्रैक्टिकल में

देख रहे हैं तो भगवान को टीचर्स का कितना रिगार्ड है। आप समझती हो इतना रिगार्ड है! जिस तरह भगवान हमारा रखता है। कहता है मेरे समान हो, जैसे मैं सेवाधारी हूँ वैसे आप भी सेवाधारी हैं और कितनी सैलवेशन मिली है। दुनिया की आवाज़ से परे, सेन्टर का स्थान मिला है। और उस स्थान पर सुखी होके खुश होके रह रही हैं। रहने का ठिकाना भी अच्छा, बुद्धि का ठिकाना भी अच्छा क्योंकि और कोई काम नहीं, एक ही काम है जो आया है उसको सैलवेशन देके बाबा का बनाना है, बस। तो बताओ टीचर्स, इसी काम में बिजी हो ना?

कुमारियाँ भी सबकी प्यारी हैं, टीचर को तो बाबा कहता है मेरे समान हो, जो मेरा काम है वही टीचर्स का काम है। बताओ बाबा का कितना प्यार है टीचर्स से, आपको भी इतना प्यार है ना बाबा से? बाबा कहता है कोई भी कैसा भी साथी मिला है लेकिन साथ में किसके रहते हो? भले स्थूल में जो भी साथी साथ रहते हों लेकिन आपका मन तो बाबा के साथ है ना। है? थोड़ा थोड़ा टीचर्स के वैरायटी स्वभाव-संस्कार को देख करके गड़बड़ हो जाता है। बाबा कहता है, मैंने भी तो इतनों को सम्भाला है ना, स्वभाव देखा ना, आपको तो कितनी मिलती हैं, चलो 20-25 ज्यादा में ज्यादा बाकी तो होते हैं 5-6 और बाबा को कितनी मिली हैं? आप भी तो मिली हो ना, आप भी तो बाबा की बनी हो ना। पक्का है ना? बाबा के बन गये हैं, पक्का का हाथ उठाओ। अरे! कुमारियों को तो देख करके बाबा इतना खुश होता है... नहीं तो कुमारियों की हालत क्या होती है! यह तो इतनी बच गयी, जो भगवान की साथी बन गयी और सभी आपको किस दृष्टि से देखते हैं? वैसे कुमारी के ऊपर जो दृष्टि पड़ती है वो क्या और कैसी होती थी और अभी यह देवियाँ हैं, परमात्मा की सन्तान हैं, इन्हों के नयन, मस्तक से आत्मा की लाइट दिखाई देती है। बाबा ने पहले भी कहा था कि सबको यह अनुभव होना चाहिए कि इनके अन्दर आत्मा की लाइट चमक रही है।

तो आज बाबा ने यही कहा है, जैसे मैं कार्य करता हूँ ना, वैसे टीचर्स का भी यही कार्य है। बाबा जैसा कार्य मिला है तो बाबा जैसा कार्य, जैसे बाबा करता है, टीचर्स की रिपोर्ट एक ही निकलती है जो साथी हैं ना वो थोड़ा तंग करते हैं लेकिन बाबा कहते हैं। तुम्हारे साथी कितने हैं 8, 10, 12 चलो ज्यादा में ज्यादा और मेरे को कितनों को बनाना है? तो जैसे बाबा वैसे आपको भी ऐसा ही कर्तव्य करना है। बाबा कहता है बस, साक्षी हो करके अपना अपना कर्तव्य करते चलो। जैसे बाबा का काम है विश्व को परिवर्तन करना, तो आपका भी यही काम है ना।

कई बहनें कहती हैं वैसे तो सब ठीक है लेकिन जो साथी होते हैं ना वो खिटखिट करते हैं, तो बाबा कहता है तुम्हारे साथी तो थोड़े होंगे, बाबा के कितने साथी हैं। उसमें कोई कोई तो खिटखिट भी करते होंगे लेकिन बाबा कभी भी उन्हों को यह नहीं कहते कि यह तो हैं ही ऐसे! नहीं। फिर भी मेरे हैं, तो टीचर्स में भी मेरेपन की भावना हो, बाबा के हैं सो मेरे हैं, मेरे हैं सो बाबा के हैं। लेकिन मेरे को जिम्मेवारी मिली है इन्हों को साथी बना करके स्वर्ग में ले जाना, इतनी जिम्मेवारी है। हम लोग ही इस दुनिया को परिवर्तन करके स्वर्ग बना रहे हैं। उस स्वर्ग के लायक बनना, बनाना यही टीचर्स का काम है। अभी भी देखो छोटा-सा सेन्टर का स्थान है, छोटा है लेकिन सोने के लिए पलंग तो है, खाना तो अच्छा मिलता है, आपस में बनाके खाते तो हो! आपस में चलो खिटखिट थोड़ी होती भी है लेकिन फिर भी देखो, आपको जैसे बाबा प्यार करता है, ऐसा प्यार किसको मिलता है! देखो, रोज़ बाबा मुरली में क्या कहता है? मीठे मीठे प्यारे प्यारे बच्चों को गुडमार्निंग यादप्यार और नमस्ते, कौन करता है? हमारा बाबा। जो विश्व का पिता है, विश्व जिसको याद करती है वो हमारे से रोज़ मिलता है। रोज़ मिलता है ना! भले सेन्टर्स पर आप अलग रहते हैं, मधुबन में सदा नहीं रहते हैं लेकिन आप सभी ने बाबा से एक वायदा किया है, वो याद है? बाबा मैंने आपको दिल में बिठा दिया है, तो बिठाया है? दिल में बाबा को बिठा दिया है? तो दिल की बात भूलती है क्या? तो दिल में कौन है? मेरा बाबा। और दिल में बाबा होने के कारण ऐसे अनुभव नहीं होता कि मैं अकेली हूँ, मेरे साथ बाबा है, मेरे दिल में बाबा बैठा है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"परिवर्तन का आधार निश्चय"

1) एक बाबा ही हमारा संसार है, एक बाबा के सिवाए कोई संसार नहीं। ऐसा कोई संसार न बने जो फिर रोना पड़े। इसलिए अपने आपसे पूछो कि नैया की पतवार अपने हाथ में हैं या बाबा के हाथ में हैं? अगर पतवार खिवैया को दिया तो खिवैया जहाँ भी ले जावे, फिर पतवार अपने हाथ में तो नहीं है। तो यह जीवन नैया की पतवार तेरे हाथों में हैं। तो अपने आपको देखो कि मुझे कहाँ तक निश्चय है? अगर निश्चय है तो परिवर्तन है? अगर परिवर्तन नहीं तो फिर निश्चय भी नहीं है। इस परिवर्तन की विधि है निश्चय और फिर निश्चय की विधि है - प्यार। अगर मेरा बाबा से प्यार है माना निश्चय है, अगर बाबा पर निश्चय है माना प्यार है। अगर निश्चय नहीं है, प्यार नहीं है तो फिर कुछ नहीं है। तो मेरा बाबा से कितना प्यार है? कितना बाबा से दुलार है? यह अपने-अपने अनुभव से पूछो।

2) हमें तो कई बार आप जैसे योगी भाईयों को देख जरूर दिल में आता कि यह सभी अपनी जीवन हथेली पर लेकर पहुँचे हैं। कोई ज्ञान से आकर्षित हो आये हैं, कोई बाबा के प्यार में आये हैं, या मधुबन का वायुमण्डल अच्छा लगता है इसलिए आये हैं, या सेवा से प्यार है इसलिए आये हैं..... परन्तु कई बार चलते-चलते थक जाते हैं क्योंकि ज्ञान-योग का फाउण्डेशन नहीं होता तो त्याग भी नहीं होता है। जैसे टांगे थक जावें तो आराम करना चाहेंगे, बैठना चाहेंगे। ऐसे ही फिर मन रूपी टांगे थक जाती हैं तो फिर किनारा करने को रास्ता ढूँढते हैं। आये थे तो बहुत अच्छा शौक था, परन्तु ऐसा नहीं समझा कि इतना त्याग करना पड़ेगा, इतना संगठन में रहना पड़ेगा, बहुत डिफीकल्ट है। फिर यह हलचल मन में पैदा होती है। भाव-स्वभाव, संगठन ..किसी एक बात का भी संशय आया तो फिर उनकी अन्त ही नहीं होती है फिर हर बात में सवाल, हर बात में संशय, हर बात में कमजोरी, हर बात में संस्कारों का टक्कर बढ़ता जाता है। फिर आखिर वह घड़ी आ जायेगी - कहाँ माया से हार खा लेंगे, फिर कहेंगे ठीक है, मेरे को मुश्किल लगता है फिर पुरानी दुनिया याद आयेगी, लौकिक याद आयेगा।

3) तो हर एक को अब यह पूछना है कि हम नष्टोमोहा हैं? या लौकिक में सम्बन्ध का आकर्षण या सूक्ष्म मोह तो नहीं है? आप मुये मर गयी दुनिया। बाबा ने शुरू में 14 साल की भट्टी में हम सबको यह पाठ ऐसा पक्का कराया जो कभी कोई संकल्प भी नहीं आवे। मैं समझती हूँ - कभी एक संकल्प भी नहीं आया होगा कि ऐसा भोजन बना है, जो मिला सो खाना है। बाबा जो खिलाये सो सही। चाहे दाल भात खिलाये, चाहे सूखा फुलका खिलाये, चाहे घी का हलवा खिलाये। हम हैं योगी लोग। हमारा मतलब योग से है और कोई बात से नहीं है। त्याग की भाषा वहाँ तक है।

4) जैसे एक गिरधर के पीछे मीरा ने राणा को छोड़ा, महल-माड़ी, सब कुछ छोड़ा। एक कफनी गेरू पहनी बस, गिरधर-गिरधर गाते मस्ती में नाचती थी। चाहे जहर का प्याला मिला, चाहे उनके गले में सांप पड़े लेकिन फिर भी उनको कुछ लगा? तो क्या जब मीरा भक्तिन एक गिरधर के लिए प्राण देने को तैयार थी तो हमें तो प्राणों का प्राण बाबा मिला। यहाँ कोई जहर का प्याला तो नहीं पिलाता है, अमृत का प्याला पिलाता है। यह तो भक्ति के अनेक उदाहरण हैं। तो यह जो थोड़ी परीक्षायें आती हैं उसमें अपनी स्थिति निश्चयबुद्धि, विजयन्ति हो। मरना तो मरना फिर जीना नहीं, ऐसे सोच-समझकर अपनी जीवन का फैंसला करना है। अगर कोई समझता है मेरे में इतनी शक्ति नहीं है तो वह अपना स्वयं जज करे। ऐसे नहीं फिर पीछे पछताना पड़े।

5) बाकी यह प्रतिज्ञा पक्की हो कि बाबा हम आपके पक्के योगी बच्चे हैं, पवित्र हैं, पवित्र ही रहेंगे - यही प्रतिज्ञा सबको दिल से बहुत पक्की करनी है। जो इस प्रतिज्ञा में पक्के रहते हैं उन्हें बाबा की 100 गुणा दुआयें मिलती हैं। हाँ जी करने वाले को कहा जाता है आज्ञाकारी, उन पर माँ-बाप की दुआयें होती हैं क्योंकि आज्ञाकारी माना सपूत। तो सदैव आज्ञाकारी रहो। बाकी जो भी नियम-मर्यादा है, इन मर्यादाओं का जीवन में श्रृंगार करते अपनी उन्नति करते रहो। और नशा रखो हम वही कल्प पहले वाले पाण्डव हैं, गोप हैं। गोप का अर्थ ही है जिससे भगवान से प्यार हो और कोई नहीं हो। गोप और गोपियां। तो कल्प पहले वाले गोप हो, पाण्डव हो। पक्के योगी, तपस्वी, त्यागी-वैरागी हो? यह सब सवाल खुद से पूछो और अपने आपको पक्का करो। सेवाधारी हो, कोई ईर्ष्या तो नहीं, कोई दुनिया याद तो नहीं आती? बुद्धि कहाँ बाहर तो नहीं जाती या भटकती है? चेक करो और चेंज कर लो। अभी समय है, नहीं तो पीछे पश्चाताप करना पड़ेगा। अच्छा।